शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल (सी.बी.एस.ई.) की कक्षा पांचवी की पर्यावरण अध्ययन विषय की पाठ्यपुस्तक का विषयवस्तु के प्रति शिक्षकों की प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन

*प्रो. मीना बुद्धिसागर (सेवानिवृत्त)
**ममता महोबिया (सहायक प्राध्यापक संविदा)
**शिक्षा अध्ययन शाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

पाठ्यपुस्तक ऐसी सामग्री है जिसका प्रयोग विद्यालय में मानक पुस्तक के रूप में होता है। अतः इसकी गुणवत्ता स्तर अत्यंत उच्च होना चाहिए। ''केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल (सी.बी.एस.ई.) एवं मध्य प्रदेश शिक्षा मण्डल में अब पर्यावरण अध्ययन को एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाता है जिसका कारण हमारी आने वाली पीढ़ी में पर्यावरणीय मूल्यों का संचार करना है। चूंकि विषय व अन्य चीजों के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का विकास इस स्तर से आरम्भ हो जाता है, अतः इस नवीन विषय की पाठ्यपुस्तक किस हद तक अपनें उद्देश्य में सफल है, जानने के लिए शोधार्थी ने 'केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल (सी.बी.एस.ई.) कक्षा पांचवी की पर्यावरण अध्ययन विषय की पाठ्यपुस्तक पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया का अध्ययय'' किया।

शोध का उद्देश्य

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल की कक्षा पांचवीं की पर्यावरण अध्ययन विषय की पाठ्यपुस्तक का, विषयवस्तु द्वारा उद्देश्य पूर्ति, विषयवस्तु की रोचकता एवं विषयवस्तु की बोधगम्यता का शिक्षकों के प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन करना था। जिसके लिए शोधकर्ता ने इंदौर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल के 13 विद्यालयों के 18 शिक्षकों का चयन सोद्देश्यपूर्ण यादृच्छिक विधि द्वारा किया। प्रदत्त संकलन हेतु विषयवस्तु के उद्देश्य, उसकी रोचकताव बोधगम्यता पर प्रतिक्रिया मापनी का विकास किया।

निष्कर्ष यह है कि जिस उद्देश्य पूर्ति हेतु विषयवस्तु का समावेश पाठ्यपुस्तक में किया गया है, वह 100 प्रतिशत पूरा नही हो रहा है, केवल कुछ हद तक ही यह उद्देश्य पूरे हो रहे हैं।

विषयवस्तु की रोचकता पर भी शिक्षक संतुष्ट नहीं है। प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के अनुरूप विषयवस्तु की रोचकता कम है। इसके अतिरिक्त विषयवस्तु बोधगम्य है। केवल विषयवस्तु के क्रम से शिक्षक सहमत नहीं है, जो कि विषयवस्तु को समझने में बाधा उत्पन्न करता है।

प्रस्तावना

पाठ्यपुस्तक का अध्ययन-अध्यापन में महत्वपूर्ण स्थान है। इसका प्रयोग विद्यालय में मानक पुस्तक के रूप में होता है। यह एक ऐसी सामग्री है जो न केवल विद्यार्थी के अधिगम को आधार प्रदान करती है

अपितु शिक्षकों को भी शिक्षण हेतु मार्गदर्शन प्रदान करती है। किसी विशिष्ट मानसिक आयु वर्ग के विद्यार्थी को हर स्तर का ज्ञान नहीं दिया जा सकता। अतः निर्धारित उम्र के विद्यार्थियों को कितना ज्ञान दिया जाये इसके लिए पाठ्यपुस्तक की आवश्यकता होती है। पाठ्यपुस्तक में न केवल विषयवस्तु का समावेश होता है वरन् उसके अन्तर्गत विद्यार्थियों की विभिन्न मानसिक क्षमताओं के विकास एवं चिंतन प्रक्रिया हेतु कई गतिविधियाँ भी सम्मिलित होती है।

"केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल (सी.बी.एस.ई.) एवं मध्य प्रदेश शिक्षा मण्डल में अब पर्यावरण अध्ययन को एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। पर्यावरणीय विज्ञान एक ऐसा विषय है जो पर्यावरण के भौतिकी, रसायनिक और जैविक अवयवों के बीच परस्पर क्रियाओं का अध्ययन करता है। शिक्षाविदों का यह मानना है कि वर्तमान में हमारा पर्यावरण बहुत महत्वपूर्ण विषय हो गया है इसीलिए इसके प्रति विद्यार्थी को जागरूक बनाना व उसमें पर्यावरणीय मूल्यों का संचार करना सबसे बढ़ी आवश्यकता है। और इसी उद्देश्य से इस विषय को प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाया जाना अनिवार्य किया गया। चूँकि यह विषय पाठ्यक्रम में नया है, अतः शोधकर्ता ने पर्यावरण अध्ययन विषय की पाठ्यपुस्तक का शिक्षकों द्वारा दी गई प्रतिक्रिया के आधार पर मूल्यांकन करने का प्रयास किया है। यह जानने का प्रयास किया है कि ये उद्देश्य वास्तव में पूरे हो रहे हैं ? यह जानने के लिए शोधकर्ता ने पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु के उद्देश्य, उसकी रोचकता व बोधगम्यता पर प्रतिक्रिया मापनी का विकास किया।

औचित्य

वर्तमान में सामाजिक परिवर्तन की तीव्र गति, समाज के प्रत्येक क्षेत्र में उसी गति से परिवर्तन की मांग कर रही है। शिक्षा का क्षेत्र भी एक ऐसा ही महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिसमें समय समय पर सामाजिक परिवर्तन के अनुरूप पाठ्क्रम में परिवर्तन अति आवश्यक है ताकि विद्यार्थी की वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। पाठ्क्रम का मुख्य केन्द्रबिन्दु पाठ्यपुस्तक होती है संपूर्ण कक्षाकक्ष शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पाठ्यपुस्तक पर केन्द्रित होती है। शिक्षक के शिक्षण के अतिरिक्त यदि विद्यार्थी के पास विषयवस्तु को समझने के लिए कोई सर्वाधिक सुगम साधन है तो वह पाठ्यपुस्तक है। पाठ्यपुस्तक विद्यार्थी की आवश्यकता, उसकी रूचि व वर्तमान के साथ-साथ भविष्योन्मुख हो, यह जरूरी है। अतः उपर्युक्त के लिये पाठ्यपुस्तक के मूल्यांकन की समय-समय पर आवश्यकता है।

चूंकि विषय के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का विकास इस स्तर से आरम्भ हो जाता है पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु का प्रस्तुतिकरण कहीं इस कार्य में बाधक तो नहीं है, अतः यह जानने के लिए कि शिक्षा बोर्ड की पर्यावरण अध्ययन विषय की पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु किस सीमा तक विद्यार्थियों की पर्यावरण अध्ययन विषय में अभिवृत्ति को विकसित कर रही है तथा पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों की रूचि विकसित करने में सहायक है ? अध्ययन करने हेतु शोधार्थी ने 'केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल (सी.बी.एस.ई.) कक्षा पांचवी की पर्यावरण अध्ययन विषय की पाठ्यपुस्तक पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया का अध्ययन' किया।

समस्या कथन

प्रस्तुत अध्ययन का निम्नलिखित समस्या कथन है-

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल (सी.बी.एस.ई.) की कक्षा पांचवी की पर्यावरण अध्ययन विषय की पाठ्यपुस्तक का विषयवस्तु के प्रति शिक्षकों की प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल की कक्षा पांचवीं की पर्यावरण अध्ययन विषय की पाठ्यपुस्तक का, विषयवस्तु द्वारा उद्देश्य पूर्ति का शिक्षकों की प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन करना।
2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल की कक्षा पांचवीं की पर्यावरण अध्ययन विषय की पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु की रोचकता का शिक्षकों के प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन करना।
3. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल की कक्षा पांचवीं की पर्यावरण अध्ययन विषय की पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु की बोधगम्यता का शिक्षकों के प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन करना।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु प्रदत्त संकलन करने के लिए इंदौर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल के 13 विद्यालयों के 18 शिक्षकों का चयन सोद्देश्यपूर्ण यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। इसमें हिन्दी एवं अंगरेजी दोनों माध्यमों के विद्यालयों का चयन किया गया था। जिसका विवरण निम्न है :

Sr .No	**Name of the school**	**No. Of Teachers**
1	Saint paul h. sc. school	1
2	Saint Andrew h.Sc school	1
3	Saint Arnold H. school	1
4	Vidya Children Academy, Palda	1
5	Sanmati H.Sc school,	1
6	Bangali Middle School, Chawani	2
7	Sunshine H.Sc School	1
8	New South wels H.Sc. School, Bhanwarkuan	2
9	Vidyasagar H.Sc. School	2
10	Saraswati Shishu Mandir, Khatiwala Tank	2
11	Saraswati Shishu Mandir, Sainath colony	2
12	Malav Shishu Vihar, Palsikar	1
13	Trinity, H. Sc. School	1
	Total	18

उपकरण

शोधकार्य हेतु प्रदत्त संकलन करने के लिए शोधकर्ता ने हिंदी व अंगरेजी दोनों माध्यमों की पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु के उद्देश्य (कथन क्र. 3,6,9,11,12), उसकी रोचकता (कथन क्र.2,5,8)व

बोधगम्यता (कथन क्र. 1,4,7,10) पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया जानने हेतु प्रतिक्रिया मापनी का विकास किया। मापनी में प्रत्येक बिन्दु से संबंधित सकारात्मक व नकारात्मक कथन रखे गए है। जिसका प्रारूप निम्न है।

क्र.	कथन	सहमत	असहमत	उदासीन
1	पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु का क्रम उपयुक्त है			
2	पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु रोचक ढंग से प्रस्तुत की गई है			
3	पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु छात्रों में पर्यावरणीय मूल्यों का संचार करने में सहायक है			
4	पाठ्यपुस्तक में दी गई गतिविधियाँ विषयवस्तु को समझने में मदद करती है			
5	पाठ्यपुस्तक में अत्यधिक रंगों का प्रयोग किया गया है			
6	पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु आसपास के पर्यावरण के प्रति जागरुक नहीं बनाती			
7	पाठ्यपुस्तक में दिए गए चित्र विषयवस्तु समझने मे बाधा उत्पन्न करते हैं			
8	पाठ्यपुस्तक में दिए गए चित्र रोचक हैं			
9	पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु प्रस्तुत करने का तरीका विषयवस्तु समझने में मदद नहीं करता			
10	पाठ्यपुस्तक में तकनीकी शब्दों का प्रयोग किया गया है			
11	पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति बढाने में सहायक है			
12	पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु छात्रों को पर्यावरण प्रति संवेदनशील नहीं बनाती			

प्रदत्त विश्लेषण

प्रदत्तों का विश्लेषण प्रतिशत विधि द्वारा किया गया, जो कि निम्न तालिका में प्रस्तुत किया गया है :

क्र.	**कथन**	**सहमत का %**	**असहमत का %**	**उदासीन का %**
	विषयवस्तु के उद्देश्य पूर्ति से संबंधित कथन			
3	पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु छात्रों में पर्यावरणीय मूल्यों का संचार करने में सहायक है	71	29	-
6	पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु आसपास के पर्यावरण के प्रति जागरुक नहीं बनाती	62	28	10

9	पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु प्रस्तुत करने का तरीका, विषयवस्तु समझने में मदद नहीं करता	50	32	18
11	पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति बढाने में सहायक है	82	12	6
12	पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु छात्रों को पर्यावरण प्रति संवेदनशील बनाती	91	09	-
	विषयवस्तु की रोचकता से संबंधित कथन			
2	पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु रोचक ढंग से प्रस्तुत की गई है	42	58	-
5	पाठ्यपुस्तक में अत्यधिक रंगों का प्रयोग किया गया है	76	24	-
8	पाठ्यपुस्तक में दिए गए चित्र रोचक है	52	48	-
7	पाठ्यपुस्तक में दिए गए चित्र विषयवस्तु समझने मे बाधा उत्पन्न करते है	39	33	28
	विषयवस्तु के बोधगम्यता से संबंधित कथन			
1	पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु का क्रम उपयुक्त है	41	59	-
4	पाठ्यपुस्तक में दी गई गतिविधियाँ विषयवस्तु को समझने में मदद करती है	82	12	06
10	पाठ्यपुस्तक में तकनीकी शब्दों का प्रयोग किया गया है	94	06	-

1 प्रदत्त विश्लेषण तालिका से स्पष्ट है कि 'विषयवस्तु द्वारा उद्देश्य पूर्ति से संबंधित कथन क्र. 3, 6, 9, 11, 12 पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया का प्रतिशत देखकर ज्ञात होता है कि कथन क्र. 3, 11 और 12 से सबसे ज्यादा शिक्षक सहमत हैं।

3	पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु छात्रों में पर्यावरणीय मूल्यों का संचार करने में सहायक है	71	29	-
11	पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति बढाने में सहायक है	82	12	6
12	पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु छात्रों को पर्यावरण प्रति संवेदनशील बनाती है	91	09	-

अतः निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ज्यादातर शिक्षक यह मानते हैं कि पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु छात्रों में पर्यावरणीय मूल्यों का संचार, विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति बढाने व छात्रों को पर्यावरण प्रति संवेदनशील बनाने में सहायक है, जबकि नकारात्मक कथनों में देखें तो ज्ञात होगा कि कथन क्र. 6 और 9 पर भी शिक्षकों की सहमति का प्रतिशत ज्यादा है। यहा भी ज्यादातर शिक्षक यह मानते हैं कि पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु आसपास के पर्यावरण के प्रति जागरुक बनाने एवं विषयवस्तु प्रस्तुत करने का तरीका, विषयवस्तु समझने में मदद नहीं करता।

6	पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु आसपास के पर्यावरण के प्रति जागरुक नहीं बनाती	62	28	10
9	पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु प्रस्तुत करने का तरीका, विषयवस्तु समझने में मदद नहीं करता	50	32	18

यह कहा जा सकता है कि जिस उद्देश्य पूर्ति हेतु विषयवस्तु का समावेश पाठ्यपुस्तक में किया गया है वह 100 प्रतिशत पूरा नही हो रहा है, केवल कुछ हद तक ही यह उद्देश्य पूरे हो रहे हैं।

2 प्रदत्त विश्लेषण तालिका से स्पष्ट है कि 'विषयवस्तु की रोचकता से संबंधित कथन' क्र. 2, 5, 8, 7 पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया का प्रतिशत देखकर ज्ञात होता है कि सकारात्मक कथन क्र. 2, और 8 से शिक्षकों की सहमति और असहमति का प्रतिशत लगभग बराबर है।

2	पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु रोचक ढंग से प्रस्तुत की गई है	42	58	-
8	पाठ्यपुस्तक में दिए गए चित्र रोचक है	52	48	-

अतः निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शिक्षक यह मानते हैं कि पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु बहुत रोचक नहीं है, जबकि नकारात्मक कथनों में देखें तो ज्ञात होगा कि कथन क्र. 5 पर शिक्षकों की सहमति का प्रतिशत ज्यादा है। यहाँ भी ज्यादातर शिक्षक यह मानते हैं कि पाठ्यपुस्तक में अत्यधिक रंगों का प्रयोग किया गया है। जबकि पाठ्यपुस्तक में दिए गए चित्रों के विषय में सहमति व असहमति का प्रतिशत लगभग बराबर है। निष्कर्ष रुप में कह सकते हैं कि चित्रों की गुणवत्ता का स्तर शायद उपयुक्त नहीं है इसीलिए प्रतिक्रिया सकारात्मक नहीं है।

5	पाठ्यपुस्तक में अत्यधिक रंगों का प्रयोग किया गया है	76	24	-
7	पाठ्यपुस्तक में दिए गए चित्र विषयवस्तु समझने मे बाधा उत्पन्न करते है	39	33	28

यह कहा जा सकता है कि विषयवस्तु की रोचकता पर शिक्षक संतुष्ट नहीं हैं। प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के अनुरूप विषयवस्तु की रोचकता कम है, जबकि इस स्तर पर आवश्यकता ज्यादा है।

3 प्रदत्त विश्लेषण तालिका से स्पष्ट है कि 'विषयवस्तु के बोधगम्यता से संबंधित कथन' क्र. 1, 4, 10 पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया का प्रतिशत देखकर ज्ञात होता है कि सकारात्मक कथन क्र. 4 से शिक्षकों की सहमति का प्रतिशत सबसे ज्यादा है। अर्थात् पाठ्यपुस्तक में दी गई गतिविधियाँ विषयवस्तु को समझने में विद्यार्थियों की मदद करती हैं, किन्तु विषयवस्तु के क्रम के संबंध में शिक्षकों की सहमति का प्रतिशत कम और असहमति का प्रतिशत ज्यादा है। अतः निष्कर्षतः कह सकते हैं कि विषयवस्तु के प्रस्तुती का क्रम संतुष्टिजनक नहीं है।

1	पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु का क्रम उपयुक्त है	41	59	-
4	पाठ्यपुस्तक में दी गई गतिविधियाँ विषयवस्तु को समझने में मदद करती है	82	12	06

जबकि नकारात्मक कथनों में देखें तो ज्ञात होगा कि कथन क्र. 10 पर शिक्षकों की सहमति का प्रतिशत ज्यादा है।

10	पाठ्यपुस्तक में तकनीकी शब्दों का प्रयोग किया गया है	06	94	-

अर्थात ज्यादातर शिक्षक इस बात से सहमत हैं कि पाठ्यपुस्तक में कठिन या तकनीकी शब्दों का प्रयोग नहीं किया गया है, भाषा सरल है जो कि समझने योग्य व विद्यार्थी के मानसिक स्तर के अनुरूप है।

निष्कर्ष रुप में कह सकते हैं कि विषयवस्तु बोधगम्य है। केवल विषयवस्तु के क्रम से शिक्षक सहमत नहीं है, जो कि विषयवस्तु को समझने में या क्रमवार व तारतम्यता स्थापित करनें में बाधा उत्पन्न करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 पाल एवं पाल.(2006). पाठ्यचर्या- कल, आज और कल. नई दिल्लीः क्षिप्रा प्रकाशन.

2 शर्मा, आर. ए.(1994). पाठ्यक्रम विकास. मेरठ उ.प्रः लायल बुक डीपो. मंगल एवं सिसोदिया.(2012). सामाजिक अध्ययन शिक्षण. आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स.

3 NCERT. (2000). Fifth Survey of Research in Education-Vol II (1988-1992). New Delhi: NCERT.

4 NCERT. (2006). Sixth Survey of Research in Education-Vol I (1993-2000). New Delhi: NCERT.

5 NCERT. (2007). Sixth Survey of Research in Education-Vol II (1993-2000). New Delhi: NCERT

6 Sharma, R.A. (2006). Teaching of Social Studies. Meerut U.P: Loyal Book Depot.

7 Kohli, A.S. (2004). Teaching of Social Studies. New Delhi: Anmol Publication.

8 Choudhary, U.S. (1976). An Evaluation of Nationalized Hindi Textbooks (classes I to VIII) of M.P: Ph.D Thesis, Department of Education DAVV, Indore.

9 वर्मा, एन.(2006). म. प्र. पाठ्यपुस्तक द्वारा अनुशंसित कक्षा नवी की विज्ञान विषय की पाठ्यपुस्तक का शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर मूल्यांकन, अप्रकाशित लघु शोध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

Webliography

http://www.ncert.nic.in

http://www.mpbse.nic.in

http://www.mptbc.nic.in

http://www.cbse.nic.in

http://www.wikipedia.com

http://www.eduresearch.dauniv.ac.in